Q - Is it correct to say that enlightened despots were really enlightened. Explain.

Scanned by CamScanner

उत्तर - 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में यूरोप में विशेषकर फ्रांस, रूस, आस्ट्रिया में ऐसे शासक हुए जिन्होंने प्रबोधन की विचारधारा अर्थात तर्कबुद्धि, धर्म-निरपेक्षता तथा मानव की स्वतंत्रता में विश्वास करते हुए प्रबुद्ध शासन को प्रवृत्त किया। इसके तहत निम्न कार्य किये गये -

1 - आस्ट्रिया शासक जोसेफ II द्वारा चर्च, मठों की सम्पत्ति पर नियंत्रण, कृषि दासों की मुक्ति, शिक्षा में सुधार के साथ राज्य को चर्च के चंगुल से मुक्ति, सामन्तों तथा सामन्ती आदि का दमन

2 - प्रशा शासक द्वारा कृषि, व्यापार, उद्योग, भौतिक सम्पदा तथा भौगोलिक विस्तारों द्वारा प्रशा की सशक्तता

3 - रूसी शासिका कैथरीन द्वारा रूस में कृषि व सामन्त व्यवस्था में सुधार, विशेषकर कानून क्षेत्र में विधियों का संहिताकरण व सरलीकरण,

Scanned by CamScanner

सजामो की मानवीयता के साथ शासन प्रणाली को मॉण्टेस्क्यू के सिद्धान्त आधार पर स्थापित करने का प्रयास।

हालांकि, उक्त शासकों की सबसे बड़ी आलोचना यही है कि वे वस्तुत: निरंकुश ही रहे जिसके तहत उन्होंने अपने को प्रबोधन विचारधारा के तहत वहाँ तक ही रखा जहाँ तक इनकी शक्ति प्रभावित नहीं हुई। इसके अतिरिक्त -

1- इन्होंने सामन्तों का दमन अपने स्वार्थों के लिए किया।

2- जोसेफ के अधिकांश प्रयास आस्ट्रिया की बहुजातीयता के चलते असफल रहे। वस्तुत: बहुजातीय लोगों को प्रबोधित करने अर्थात अपना निर्णय उन्हें स्वयं लेने देने के लिए उसने कुछ नहीं किया

3- इसी प्रकार, कैथरीन ने भी विद्रोहों को दमन क्रूरता से किया तथा प्रशा व शासक के समान साम्राज्य विस्तार का त्याग नहीं किया।

इस प्रकार, प्रबुद्ध निरंकुश शासक प्रबुद्ध कम निरंकुश अधिक थे।

Scanned by CamScanner

Q- "The promptings of the heart are more to be trusted than the logic of the mind." - Roussau. Evaluate this statement in the light of Rosseau's romanticism!

उत्तर - स्वच्छन्दतावाद 18 वीं शताब्दी का एक प्रमुख आंदोलन है, जो मानवीय व्यवहार को निर्धारित करने में तर्क के बजाए भावनाओं, अन्तर्ज्ञान व प्रवृत्ति पर बल देता है। इसके प्रमुख प्रवर्तक के रूप में रूसो ने अनुभवात्मक, तर्क आधारित वैचारिक चिन्तन के स्थान पर भावनाओं, समाज की संरचना व कैद के स्थान पर व्यक्ति के उसके 'प्राकृतिक अवस्था' में लौटने पर बल दिया। इस सन्दर्भ में उन्होंने निम्न बातें कहीं -

1- उन्होंने व्यक्ति के विकास को एक शान्तिपूर्ण, श्रेष्ठ प्राकृतिक अवस्था से एक 'असंतुलित सामाजिक अवस्था तक दर्शाया तथा असमानता व नैतिक अवनयन के लिए 'व्यक्तिगत संपत्ति' व विभिन्न रोजगारों को जिम्मेदार ठहराया

2- उनका मानना था कि व्यक्ति स्वतंत्र पैदा हुआ है किन्तु सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है। इसी कारण 'सामाजिक संविदा' के तहत उन्होंने एक सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक व्यवस्था की व्याख्या की जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की सामान्य इच्छा पर आधारित राज्य की बात थी जिसमें प्रत्येक कानून व्यक्ति की स्वतंत्रता व समानता की रक्षा करेगा।

3- उन्होंने संप्रभुता के जनता में निहित होने तथा इसी संप्रभु द्वारा कानूनों के निर्माण पर बल दिया जो प्रत्यक्ष लोकतंत्र का ही एक रूप होगा।

इसी के अनुसार, एक सर्वश्रेष्ठ संसार वह है जिसमें व्यक्ति अपनी सर्वाधिक 'प्राकृतिक अवस्था' में होता है, वह 'संगठित समाज' के विचार से नफरत करते थे क्योंकि वह मनुष्य की प्राकृतिक अवस्था का अतिक्रमण करता था हालांकि वे यह जानते थे कि ऐसा किया जाना आवश्यक है।

एवं इसी 'सामाजिक संविदा' को एक विचार ही मानते थे जो पूर्ण रूप से लागू नहीं हो सकता था। इस रूप में वे एक

Scanned by CamScanner

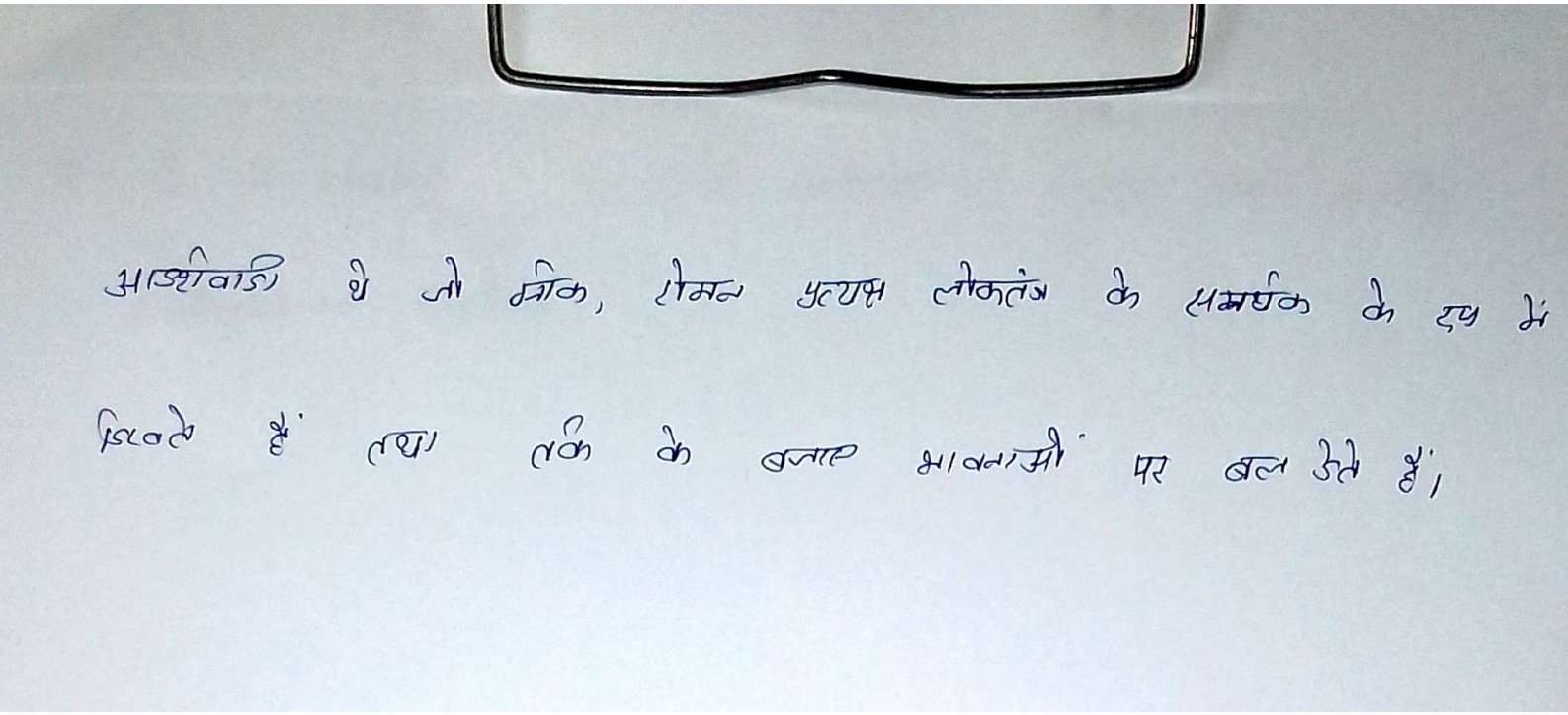

आशीर्वादी थे जो क्योंकि, रोमन प्रत्यक्ष लोकतंत्र के समर्थक के रूप में दिखते हैं तथा तर्क के बजाए भावनाओं पर बल देते हैं।

Scanned by CamScanner